विलायत अनुलीपी

कहते हैं कि लिवरपूल में

ब्रिटेन के अन्य शहरों
की तरह कोई भी सुस्थापित

दक्षिण एशियन समुदाय नहीं है.

पर इतिहास गवाह है कि ब्रिटेन
के कई अन्य हिस्सों से पहले

लिवरपूल हिन्दुस्तानियों का घर
रह चुका है.

इन आदिवासियों को भुलाया जा चुका है.

यह तसवीरों का संग्रह ही
इसका एकमात्र लिखित प्रमाण है.

कि वे कौन थे और
कहां से आए -

- पहले हिंदुस्तानी
जो लिवरपूल में आकर बसे.

हिन्दुस्तानी से हमारा मतलब है पाकिस्तानी,

हिन्दुस्तानी,

बांगलादेशी

और श्री लंकावाले,

क्योंकि तब हिंदुस्तान
विभाजित नहीं हुआ था.

वे मुख्यतः उत्तर-पश्चिमी इलाकों
से आए थे -

जिन्हें पंजाब और पाकिस्तान
माना जाता है.

वे सन १९१० और १९५०
के बीच आए थे,

उन ज़्यादातर हिन्दुस्तानियों से काफी पहले

जो सन १९५० के बाद आए .

वो क्या था जिसने उन्हें मजबूर किया
घर छोड़ने को,

ऐसी जगह जाने को, जो उनकी धरती
से बिलकुल अलग और मीलों दूर थी?

हर किसी का यहां आने का अपना कारण था

और कईयों के लिए
यह आर्थिक ज़रूरत थी.

जहां वह रहते थे वहां ज़िंदगी कठिन थी

और कमाई के अवसर कम थे.

उस वक्त ब्रिटिश सरकार ने हिंदुस्तान को
तमाम धन-दौलत से खाली कर दिया था,

तो वे उन्हीं रेलों और पानी के जहाजों से

लिवरपूल पहुंच गए जिन
माध्यमों की मदद से,

हिन्दुस्तानी दौलत को इंगलैंड
पहुंचाया गया था.

उस समय लिवरपूल की

प्रतिष्ठा आसमान को छू रही थी

वो दुनिया के सबसे धनवान
शहरों में से एक था,

मुख्यतः अपने काले अतीत की बदौलत
जो दास-व्यापार से जुड़ा था.

इन शुरूआती आदिवासियों के

कान में यह बात पहुंच गयी थी

कि मीलों दूर एक जगह है
जहां की सड़कें सोने की बनी हैं .

और बाकी जो लोग आए
वो सिर्फ घूमने के शौकीन थे,

अपने से पहले आए रोमानी जिप्सियों की तरह,

जिनका अपना मूलस्थान भी
हिन्दुस्तान का उत्तरी-पश्चिमी इलाका ही था.

घूमना-फिरना उनके खून में शामिल था,

वे पहले ट्रेन से हिन्दुस्तान के
प्रमुख हिस्सों तक,

जैसे करांची, बंबई और कलकत्ता
तक पहुंचे,

और इंगलैंड जाने वाले कई जहाजों
में से किसी एक में सवार हो गए

रुई, मसालों, चांदी और कई अन्य
बहूमूल्य चीजों के साथ.

सफर में तीन हफ्ते से तीन
महीने तक लग जाते थे,

अक्सर बेहद भीड़-भड़क्के मे फंसे हुए,

कई लोगों के लिए समुद्री सफर तो
दूर की बात, समुद्र देखने का भी

वो पहला ही अवसर था.

लिवरपूल पहुंचनेवाले शुरूआती
आदिवासी नौजवान मर्द और औरतें थे

उन्नीस और बीस साल के बीच की उम्र के.

समुद्री जहाज से उतर कर उन्होंने खुद को

एक अजनबी धरती पर पाया,

जो उनकी धरती से अलग थी.

अकेले, बिना किसी दोस्त रिश्तेदार
या जानपहचान के,

अक्सर जेबों में बेहद कम
पौंड्स के साथ

और वहां की भाषा से अनजान

उनके पास काम पाने के आसार
बेहद कम थे

और रहने की जगह पाने के भी.

कई लोगों ने काम ढूंढने की
शुरूआत बंदरगाह से ही कर दी.

जो भी काम मिला,
उन्होंने पूरी मेहनत से किया,

अक्सर ऐसे काम किये
जो कोई भी और न करता.

कुछ के लिये तो काम मिलना
ही असंभव रहा.

काम की जगह पर अक्सर
दुश्मनी का सामना करना पड़ा,

या भेदभाव और जात-पात का.

यही परेशानियां उन्हें घर ढूंढने
में भी पेश आयीं.

अभिमानी व्यक्ति होने के नाते, कम
पैसों में किसी ज़ालिम के लिए

काम करने की जगह

वे जीवन-यापन के लिए दूसरे
तरीके ढूंढने लगे.

कुछ फेरीवाले और
मदारी बन गए

और कुछ भविष्य वक्ता.

काम काफी मेहनत का होता था
और अक्सर देर तक करना पड़ता था,

पर कम-से-कम
वे अपने मालिक खुद थे

और आज भी, काफी एशियन
दूसरों के लिए काम करने की जगह

अपना काम करना पसंद करेंगे

श्री हरबंस सिंह रंगीला उन्हीं
लोगों में से एक थे

जो फेरीवाले बन गए.

वे लिवरपूल अपने भाई अजीत सिंह
के साथ आए थे.

सबसे पहले उन्होंने बंदरगाह पर
काम ढूंढने की कोशिश की,

पर उन्हें यह कह कर मना कर
दिया गया, कि उनकी उम्र ज्यादा है

क्योंकि उनके दाढ़ी थी,

जबकि तब उनकी उम्र
सिर्फ २० साल थी.

दोनों जान गए कि उनके साथ
भेद-भाव हो रहा है

क्योंकि वो सिख थे
और पगड़ी पहनते थे.

इस प्रकार के
भेदभाव की वजह से

कई सिखों ने अपनी दाढ़ी मुंडवा लीं
और अपने बाल कटवा लिये.

फेरीवाले की जिंदगी बड़ी
तकलीफ़देह थी,

सारा दिन सड़कों पर घूमने,
दरवाजे खटखटाने

और पीठ पर सामान लादकर घूमने
में कमर अकड़ जाती थी

उन्होंने कपड़े, खिलौने और
रसोई के बरतन तक बेचे

और हर वो चीज़
जिसकी मांग होती थी.

उन दिनों फेरी लगाने के लिए,

पुलिस से लाइसेंस
लेना पड़ता था.

पुलिस ने अक्सर
लाइसेंस देने के मामले में उन्हें

तब तक बेहद परेशान किया जब तक

कि उन्हें रिश्वत न दे दी गई.

श्री बहादुर सिंह ने भी
शुरूआत फेरीवाले के तौर पर की.

वे लिवरपूल लाहौर से आए थे,
जो अब पाकिस्तान में है.

१९२९ में उनकी उम्र ३६ साल थी.

उनका पहला ठिकाना था
६४ स्टैनहोप स्ट्रीट टॉक्सटैथ.

वे सिर्फ फेरीवाले ही नहीं थे,
भविष्य वक्ता भी थे.

कितना गजब का नजारा होता होगा,

एक हिंदुस्तानी दरवाज़ों पर दस्तक दे रहा है
ताकि आपका भविष्य बता सके.

आखिरकार श्री बहादुर सिंह का
साथ देने के लिए उनकी पत्नी

टेका देवी इंगलैंड पहुंच गयीं,

जिन्हें प्यार से मांजी या मां
कहा जाता था.

वे लिवरपूल में बसने वाली
पहली सिख महिला तो नहीं थीं

पर उन्हीं में से एक जरूर थीं
और उन्होंने एशियन समुदाय को बसाने में

महत्वपूर्ण भूमिका निभायी.

टेका देवी
एक धार्मिक प्रवत्ति की महिला थीं.

उन्होंने हिन्दुस्तान से आए कई लोगों
की मदद की और उन्हें सहारा भी दिया.

वे उन्हें अपने घर पर रखतीं और
खाना भी खिलातीं,

बगैर इस बात की परवाह किये
कि वो लोग हिंदु हैं या मुस्लिम.

उन कई हिंदुस्तानी मर्दों की नज़र में
उन्हें मां का दर्जा प्राप्त था

जो यहां ४० और ५० के दशक में आए.

कई लोगों के लिए वे उनकी असली मां
या बहन का रूप ले चुकी थीं.

एक और फेरीवाले थे
श्री बैज नाथ रानदेव

बाकी लोगों की ही तरह उनके लिए भी

नौकरी ढूंढना, असंभव तो नहीं
पर मुश्किल जरूर रहा.

वे यहां आए थे
पंजाब के जालंधर जिले में

स्थित फिल्लौर के किसी करीबी
गांव से.

वे यहां सन १९३६ में आये
तब वे २० साल के नौजवान थे

वे टॉक्सटैथ में
कार्लिंगफोर्ड रोड पर रहते थे.

कई शुरुआती आदिवासी ने महसूस किया
कि इज़्ज़त का काम करना है तो

उन्हें खुद का काम करना पड़ेगा.

वे अपनी आत्मा को चोट
पहुंचानेवाला काम नहीं करना चाहते थे

जैसे सड़कों पर जमी
बर्फ़ हटाने का काम,

इकलौता काम जो उन्हें
मिल पाता था.

कुछ लोगों ने मनोरंजन की दुनिया
में घुसने के लिए

देसी हुनर का सहारा लिया.

उनमें सबसे ज़्यादा मशहूर थे
श्री रसूल खान,

जिनका रंगमंच का नाम था
गिली गिली मैन .

उन्हीं ने वहां पर पाकिस्तानी थियेटर

की स्थापना की.

उनके शो ने पूरे ब्रिटेन
का भ्रमण किया

जिसमें वे पूर्वी जादू के
खेल दिखाते थे,

खेल जो हिंदुस्तान की
पहचान बन गए.

उन्होंने धीरे-धीरे अपना शो तैयार किया

और परिवार बढ़ने पर उन्हें
भी उसमें शामिल कर लिया,

जैसे उनकी पत्नी, जो एक अफ्रीकी महिला थीं
और उन्हें शेफ़ील्ड में मिली थीं.

श्री खान अटोक नामक
गांव से आये थे,

जो पाकिस्तान के उत्तरी-पश्चिमी
इलाके में स्थित है.

वे लिवरपूल सन १९२६ में पहुंचे

उस वक्त वे २० साल के नौजवान थे.

मनोरंजन की दुनिया के दूसरे
शख्स थे

श्री बचन सिंह.

वे लिवरपूल में जादूगर और
मसखरे दोनों थे.

उन्होंने रंगमंच पर प्रदर्शन किये और
समुद्री नाविकों के लिये जहाज़ो पर भी

और एक बार हिंदुस्तान के
हाई कमिश्नर की सिफारिश पर भी.

श्री सिंह, जो कि पंजाबी थे,

पंश्स्ता के गांव से आये थे

जब वे लिवरपूल पहुंचे

तब टॉक्सटैथ में
९ मलग्रेव स्ट्रीट में रहे.

औरों कीं तरह श्री सिंह ने भी
कई चीज़ों में हाथ आजमाया

वे फेरीवाले थे

और उन गिने-चुने लोगों में से भी
जिन्हें एक फैक्ट्री में काम मिला,

जो स्पेक में डनलप के लिये काम करती थी.

बुरे सुलूक और कम तनख्वाह
की वजह से बाकी लोगों की तरह

बहुत जल्दी उनका भी नौकरी से
मोह भंग हो गया था.

कुछ लोगों को पश्चिम में रहकर
कभी चैन नहीं मिला,

जैसे श्री सैयद जफ़र शाह,
जो २० वें दशक में आए थे.

वे पठान थे,
पाकिस्तान के उत्तरी-पश्चिमी सीमांत इलाके से

जहां इन मज़बूत लड़ाकों की बिरादरी
पायी जाती है.

उनके लिये सफ़र तो काफ़ी आसान था,

पर अनजान धरती पर बसना
बेहद मुश्किल.

दूसरों की तरह,
उन्हें भी काम पाने में मुश्किलें आयीं,

पर रास्ते की तमाम

रुकावटों के बावजूद

उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति ने
उन्हें कामयाबी दिलायी.

कुछ लोग जितनी मेहनत करते थे
उतना ही मौज-मस्ती में विश्वास रखते थे,

जैसे जगजीत सिंह
और तुलसी राम शर्मा,

जिन्हें लोग प्यार से चांद और
राम कह कर बुलाते थे.

ये दोनों शख़्स
लिवरपूल में

अपनी मौज-मस्ती की आदतों
की वजह से काफी मशहूर थे

उन्हें अपने व्यक्तित्व पर
बेहद गर्व था.

चांद, जो पंजाब का रहनेवाला था,
राम के साथ, बंदरगाह पर

काम करता था.

१९३४ में राम २१ साल का था.

वह हिमालय के खूबसूरत शहर
शिमला का रहनेवाला था.

वे दोनों टॉक्सटैथ में रहते थे
और कई सालों तक अच्छे दोस्त बने रहे.

शुरुआती आदिनिवासी अपने
घर छोड़ कर इस धरती पर

दौलत की तलाश में आये थे

क्योंकि उनके खयाल से यहां की सड़कें
सोने की बनी थीं.

उन्हें अपने आस-पास बेशुमार
दौलत तो नज़र आयी

पर उसका एक टुकड़ा मिलना
भी काफी टेढ़ी खीर थी

जबकि उन्होंने कड़ी मेहनत से काम किया,

अपने आस-पास के
कई लोगों से कहीं ज़्यादा कड़ी,

पर जो मेहनत का फल
उन्हें मिलना चाहिये था

वह अक्सर उनकी पहुंच से दूर ही रहा.

कुछ लोगों का पश्चिम से बिलकुल
मोह भंग हो गया.

कुछ के लिये सिर्फ शराब
ही एक सहारा रह गयी.

अभिमानी होने के नाते,

वे अपने घर खाली हाथ नहीं
लौटना चाहते थे.

पर कई लोग सफल भी हुए.

उन्होंने अपने व्यवसाय स्थापित किये,
अपने परिवार बसाये,

और लिवरपूल एवं लिवरपूल
में रहनेवाले काले समुदाय में

रहकर एक महत्वपूर्ण भूमिका
निभायी.

शाह नवाज़

माखन सिंह

बैज नाथ मजीथा

सी. एल. खन्ना

दर्शन सिंह लांडे

बलबीर भंडारी

बलवंत सिंह

सलग्राम विज

मीर आलम

हरबंस सिंह रंगीला

वीर सिंह

करतार सिंह

बहादुर सिंह

जगतजीत सिंह

तुलसी राम शर्मा

रसूल खान

बचन सिंह बर्मन

लाजपत विज

टेका देवी

अली मोहम्मद शरीफ़

बाबू बेन्स

बैज नाथ रानदेव

अमर सिंह बर्मन

मन मोहनी

दीवान खान